9th class hindi notes chapter 2

मंझन

कवि – परिचय

मंझन हिन्दी के एक प्रसिद्ध सूफी कवि थे । इनके जीवन के संबंध में बहुत ही कम जानकारी प्राप्त है । अनुमानतः इनका जन्म सोलहवीं सदी के आरंभ में हुआ था । इनका पूरा नाम गुफतार मियां ' मंझन ' था । इनका मूल निवास अनूपगढ़ था ।

सूफी कवि ' मंझन ' के यश का एक पात्र आधार उनकी रचित मधुमालती है । कवि के जीवन – काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है परन्तु रचना – काल के हिसाब से वे शेरशाह के उत्तराधिकारी सलीमशाह के समय मौजूद थे जो 1545 ई . में गद्दी पर बैठा था । कवि ने सन् 1545 ई . में ' मधुमालती ' की रचना की । सूफियों से प्रभावित होने के कारण कवि ' मंझन ' ने अपनी कृति में सूफियों की प्रेम – पद्धति का अनुकरण किया है । प्रेम के द्वारा ही परमात्मा को पाया जा सकता है । इस अवधारणा को ध्यान में रखकर ही ' मंझन ' ने मधुमालती में प्रेम वर्णन किया है । कवि ने मधुमालती में नायक – नायिका के प्रथम दर्शनजन्य प्रेम के साथ पूर्व जन्म के प्रणय – संस्कारों की महत्ता दिखलाई है । नायक के प्रेम की गम्भीरता एवं एकोन्मुखता का परिचय इस बात से मिलता है कि वह एक और मधुमालती की प्राप्ति के लिए भांति – भांति के कष्टों को सहन कर लेता है तथा दूसरी ओर महासुन्दरी प्रेमा के प्रणय – प्रस्ताव को ठुकरा देता है । सामान्यतः हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यों में नायक को बहुपलीवादी दिखाया गया है , किन्तु यह प्रेमाख्यान इसका अपवाद है । अन्य प्रेमाख्यानक काव्यों की तुलना में कवि की कल्पना क्षितिज के तारों के समान झिलमिल दिखाई पड़ती है । इसका कारण है कथा के निर्वाह में अकुशलता । कथा में बारहमासे का औचित्य न होने पर भी इसका निर्वाह किया गया है । कवि धरातल पर कम कल्पना – लोक में अधिक विचरण करता दिखलाई पड़ता है । परन्तु इससे प्रेम का आदर्श कहीं उद्वेलित नहीं होता है । नायक को अप्सराएँ उड़ाकर मधुमालती की चित्रसारी में रख आती हैं और वहीं नायक नायिका को देखता है । कवि प्रेम की अखंडता दिखाकर प्रेमतत्व की व्यापकता और नित्यता का आभास दिलाता है । सूफियों के अनुसार यह सारा जगत एक ऐसे रहस्यमय प्रेमसूत्र से बँधा है जिसका अवलंबन करके जीवन उस प्रेममूर्ति तक पहुँचने का मार्ग पा सकता है और यह मार्ग प्रेम की विरहावस्था है । ईश्वर का विरह सूफियों के यहाँ प्रधान सम्पत्ति है जिसके बिना साधना के मार्ग में कोई प्रवृत्त नहीं हो सकता । कवि की विशेषता इस बात में है कि कवि ने कथा को सुखान्त बनाया है । साधारणतः हिन्दी के सूफी कवियों ने अपनी कहानी को दुःखान्त बनाया है लेकिन ' मंझन ' ने अपनी कहानी का अन्त नायक – नायिका के सुखद् मिलन से किया है । कुल मिलाकर मधुमालती में कवि ने अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा और अपने आध्यात्मिक ज्ञान का बहुत सुन्दर परिचय दिया है ।

कविता का भावार्थ

1. इस सार में प्रेम अमूल्य , अनमोल अंगूठी के नगीने के समान है । यह प्रेम जिसे हो गया वह धन्य हो गया । प्रेम के ही कारण संसार है । प्रेम की गहराई में जाकर ही ईश्वर को पाया जा सकता है । प्रेम के प्रकारा से सारी दृष्टि प्रकाशित हो उठती है । प्रेम के इस संसार में कोई जोड़ नहीं है । वे विरल होते हैं जिन्हें यह प्रेम होता है । इस प्रेम को पाना बड़े सौभाग्य की बात है । चारो युग में यह शब्द बड़ी ऊंची स्वर में सुनाई दिया । जो इस रास्ते में अपना मन लगा दिया वह राजा हो गया । प्रेम चारों दिशाओं का बाजार है जो व्यापारी इसे प्राप्त करना चाहता है कर इसे अमित न करे ।

2. इस संसार में कोई अमर नहीं है । मारने से उसे मृत्यु भी मार नहीं पाती है । प्रेम के आग में जो सही से तपा वह संसार में काल से भी बच गया । प्रेम के शरण में जो जीव चला गया वह अपने आप उबर गया । वह किसी के

https://www.evidyarthi.in/

मारने से कैसे मरेगा क्योंकि प्रेम अमर है । एक वार जो प्रेम को पा लेता है उसके नजदीक काल भी नहीं आते हैं । प्रेम के कारण जिसकी मृत्यु हुई उसके लिए मृत्यु का फल अमृत हो गया । निश्चय ही वह शरीर अमर हो गया । जो जीव काल को इस संसार में जानता है , नियम से प्रेम के शरण में जाता है । फिर दोनों संसार और काल सभी से प्रेम हो जाता है ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/